शब्दों के बारे में क्या, वे भी समयानुसार रूपांतरित हो जाते है।
– अज्ञात

विचार-प्रवाह

देहरादून शनिवार 26 सितंबर 2020

पेज थ्री
www.page3news.in

टीम में महिलाओं की मौजूदगी

इस टीम में महिलाओं की मौजूदगी उस नए अफगानिस्तान की झलक दे रही है जो तालिबान शासन के बाद के दो दशकों में उभरा है। वरना तालिबान शासकों ने 1996 से 2001 के बीच जैसा माहौल बना रखा था।

नवीन वर्मा।।

करीब दो दशक चले गृहयुद्ध के बाद अफगानिस्तान सरकार और तालिबान के नुमाइंदे कतर की राजधानी दोहा में आमने–सामने बैठे तो शांति की शर्तें तय करने वालों में कुछ महिलाएं भी शामिल थीं।

तालिबान की तरफ से आई टीम में सभी पुरुष हैं लेकिन अफगानिस्तान सरकार की 21 सदस्यीय टीम में चार महिलाएं भी हैं। इस टीम में महिलाओं की मौजूदगी उस नए अफगानिस्तान की झलक दे रही है जो तालिबान शासन के बाद के दो दशकों में उभरा है। वरना तालिबान शासकों ने 1996 से 2001 के बीच जैसा माहौल बना रखा था उसमें यह बात सोची भी नहीं जा सकती थी कि अफगानिस्तान का भविष्य तय करने वाली किसी टीम में महिलाएं न केवल शामिल होंगी बल्कि अपनी तरफ से ठोस शर्तें भी रख रही होंगी। उस दौरान महिलाओं को न केवल नेल पॉलिश और लिपस्टिक लगाने जैसी मामूली बातों पर कड़ी सजा दी जाती थी बल्कि उनके अकेले घर से निकलने पर भी पाबंदी थी।

अफगान लड़कियों के पढ़ने–लिखने पर तो रोक थी ही, ड्रेस कोड का हल्का सा उल्लंघन करने पर उन्हें सरेआम कोड़े लगाए जाते थे। हालांकि अफगानी समाज में की महिलाओं की ऐसी दुर्गति पहले नहीं थी। उनके लिए तालिबान शासन का दौर और भी ज्यादा त्रासद इसलिए था क्योंकि आजादी और बराबरी के माहौल में सांस लेना कैसा होता है, यह वे जानती थीं। 1964 के संविधान ने उन्हें समानता का अधिकार दिया था, और यह सिर्फ कागजी बात नहीं थी। सत्तर के दशक में काबुल यूनिवर्सिटी का कैंपस दुनिया के सबसे आधुनिक और खुले माहौल वाले परिसरों में गिना जाता था। इस विश्वविद्यालय का चिकित्सा विभाग तकरीबन पूरी तरह महिला डॉक्टरों द्वारा ही संचालित होने के लिए चर्चित था। हालात अचानक नहीं, धीरे–धीरे बिगड़े। जैसे–जैसे अफगान समाज में धार्मिक कट्टरपंथी तत्वों का बोलबाला बढ़ता गया, महिलाओं की स्थिति कमजोर होती गई। यह गिरावट तालिबानी शासन के कुछ समय पहले से नजर आने लगी थी, हालांकि इस शासन के दौरान हालात सबसे ज्यादा बुरे रहे।

2001 में तालिबानी हुकूमत का खात्मा होने के बाद 2004 के संविधान ने महिलाओं के लिए दोबारा 1964 के संविधान जैसी ही व्यवस्था कर दी, लेकिन समाज पर तालिबानी प्रभाव खत्म नहीं हुआ है, लिहाजा दूर–दराज के इलाकों में महिलाओं पर आज भी कई पाबंदियां लागू हैं। अभी जब दोबारा अफगानिस्तान के शासन में तालिबान के भागीदार होने की स्थितियां तैयार हो रही हैं, तब यह आशंका सबके मन में है कि कहीं फिर से महिलाओं को वैसा ही दौर न देखना पड़े। शांति प्रक्रिया में शामिल महिला प्रतिनिधि पूरी दृढ़ता से कहती हैं कि वे और उनके देश की तमाम महिलाएं 'ऐसा किसी भी सूरत में नहीं होने देंगी। तालिबान को नए अफगानिस्तान की हकीकत स्वीकार करनी होगी।' इस युद्ध जर्जर देश की कशमकश में सबक संसार के उन सभी समाजों के लिए है जो किसी न किसी रूप में कट्टरता के उभार का सामना कर रहे हैं।

संस्कृति और साहित्य

धर्म-दर्शन

अशोक वोहरा।
देश में संस्कृति, साहित्य तथा अन्य उपयोगी कलाएँ तभी विकास पा सकती हैं जब चारों ओर शान्त वातावरण हो। युद्ध के इस विकराल रूप को देखकर तथा इसके परिणामों से परिचित होने के कारण मनुष्य सदैव से इसका विरोध करता रहा है। युद्ध न होने देने के लिए मानव ने सदैव से प्रयत्न किए हैं। महाभारत का युद्ध होने से पहले श्रीकृष्ण भगवान् स्वयं शान्ति–दूत बनकर कौरव सभा में गए थे। आधुनिक युग में भी प्रथम विश्व युद्ध की समाप्ति के बाद 'लीग–आफ–नेशन्स' जैसी संस्था का गठन किया गया। परन्तु मानव की युद्ध–पिपासा भला शान्त हुई क्या? अर्थात् फिर दूसरा विश्व युद्ध हुआ। इसके बाद शान्ति की स्थापना के लिए संयत्त राष्ट्र संघ जैसी संस्था का गठन हुआ। परन्तु फिर भी युद्ध कभी रोके नहीं जा सके।

संपादकीय

मत बुलाओ पटना

पहचान छिपाने की कोशिश बिहार के साथ जुड़े पिछड़ेपन की वजह से भी प्रचलित है। मुंबई की फिल्म इंडस्ट्री में तो कलाकारों के लिए अलिखित अनिवार्यता है कि वे अपनी भाषा और लहजा छोड़ें। मानक उच्चारण करें। सभी हिंदी प्रदेशों से आए कलाकार इस समस्या से जूझते हैं। बिहार के अधिकांश कलाकार सार्वजनिक तौर पर अपनी मातृभाषा (भोजपुरी, मैथिली और मगही) में बातें करते सुनाई नहीं पड़ते। प्रसंगवश, अनुभव सिन्हा और मनोज वाजपेयी को भी भोजपुरी में ऑडियो–विजुअल मीडियम में कुछ करने में 20 साल से अधिक समय लग गया। उनका भोजपुरी रैप 'बंबई में का बा?' हाल ही में आया है। बिहार सरकार की फिल्मों में अरुचि जाहिर है। पिछले कुछ सालों से रुक–रुक कर चल रहा फिल्म फेस्टिवल बंद हो चुका है। बार–बार की गई घोषणाओं के बावजूद अभी तक बिहार में फिल्म सिटी की स्थापना पर ठोस फैसला नहीं लिया जा सका है। बिहार सरकार बिहारी कलाकारों को कोई सम्मान और पुरस्कार भी नहीं देती, जबकि मूक सिनेमा के दौर से बिहारी कलाकार फिल्मों से जुड़ते रहे है। राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता कलाकारों और निर्देशकों को बुलाने और सम्मानित करने की औपचारिकता भी कभी नहीं निभाई मुख्यमंत्री नीतीश कुमार और उनकी सरकार ने। लेकिन इस समय सुशांत सिंह राजपूत की 'बिहारी पहचान' को लेकर दोनों बड़े विकल हैं।

जब देखा कि मैं प्रचारित तथ्यों से सहमत नहीं हो पा रहा हूं तो उसने आखिरी बात कही, 'अरे अजइया, सुशांत बिहारी था। कम से कम बिहारी होने के नाते तो उसके पक्ष में बोलो। उसके लिए न्याय की मांग करो।'

देर से पता चला

अजय ब्रह्मात्मज।।

पिछले दिनों गांव के एक स्कूली दोस्त से बात हो रही थी। टीवी और अखबारों से मिली खबरों ने उसके दिमाग में भर दिया था कि इस मामले में रिया ही पूरी तरह से दोषी है और यह कि सीबीआई के हाथों में केस जाने के पहले महाराष्ट्र पुलिस सही जांच नहीं कर रही थी। वह देर तक मुझे समझाने में लगा रहा। जब देखा कि मैं प्रचारित तथ्यों से सहमत नहीं हो पा रहा हूं तो उसने आखिरी बात कही, 'अरे अजइया, सुशांत बिहारी था। कम से कम बिहारी होने के नाते तो उसके पक्ष में बोलो। उसके लिए न्याय की मांग करो।' बता दूं कि बिहार के सुपौल जिले के बीरपुर में मेरी स्कूली शिक्षा हुई है। सुशांत सिंह राजपूत की बिहारी पहचान उनकी संदिग्ध मौत के बाद मुखर हुई है। उसके पहले कम ही लोग जानते थे कि वे बिहार से हैं। वह इंटरव्यू में अपनी बिहार की पृष्ठभूमि का उल्लेख नहीं करते थे।

हम सभी जानते हैं कि मनोज वाजपेयी बिहार के बेतिया जिले के बेलवा गांव के हैं। इसी प्रकार पंकज त्रिपाठी गोपालगंज के बेलसंड गांव के हैं। शत्रुघ्न सिन्हा तो बिहारी बाबू के नाम से जगत विख्यात हैं। शेखर सुमन ने भी बिहारी पहचान को हमेशा जाहिर किया। सुशांत सिंह राजपूत के बारे में कुल जानकारी यही है कि वह पटना के थे। अमूमन हर बिहारी का एक गांव या कस्बा होता है। सुशांत सिंह राजपूत के गांव के बारे में जानकारी 2019 में मिली, जब वे पूर्णिया के मलडिहा में 17 सालों के बाद पहुंचे। बिहार से प्रकाशित अखबारों में तब यह खबर बनी थी।

2013 में 'काय पो छे' की रिलीज के समय उन्होंने अपना पीआरओ रखा था। उन दिनों हिंदी और अंग्रेजी मीडिया के सीनियर पत्रकारों से उन्होंने बातें कीं। मुझे याद है कि उस मुलाकात में मेरे आदतन पृष्ठभूमि पूछने पर उन्होंने खुद को दिल्ली का ही बताया था। बाद में एक पत्रकार मित्र से उनके बिहारी होने की जानकारी मिली तो मैंने अगली मुलाकात में पूछ लिया, 'क्यों सुशांत, आप तो बिहार से हैं? कहां के हैं?' थोड़ा झेंपते और मुस्कुराते हुए उन्होंने बताया था, 'पटना से हैं। लिखिएगा मत।' ऐसे ही 'एम एस धोनी' की रिलीज के समय जब कुछ युवा पत्रकारों ने उनसे पूछा कि आप तो पटना से हैं तो धोनी की भाषा पकड़ने में दिक्कत नहीं हुई होगी? इस पर उन्होंने कहा, 'नहीं, मैं पटना से नहीं हूं। मैं तो दिल्ली में पढ़ा–लिखा हूं।' हालांकि अभी हाल में उनके बारे में सब जगह छपा कि उनकी स्कूलिंग पटना में हुई थी।

मनोवैज्ञानिक और समाजशास्त्री बताएंगे कि एक लोकप्रिय अभिनेता अपने जीवन काल में क्यों और किस–किस ग्रंथि के चलते अपनी मूल पहचान छिपाता है। लेकिन दिलचस्प बात यह कि वही अभिनेता मौत के बाद कुछ कारणों से अचानक उसी पहचान का प्रतीक बन जाता है। बिहार सरकार की अनुशंसा पर सुशांत प्रकरण को सीबीआई ने अपने हाथों में लिया है। 5 अगस्त को नीतीश कुमार ने ट्वीट किया 'स्वर्गीय सुशांत सिंह राजपूत के पिता द्वारा पटना में दर्ज कराए गए मामले की सीबीआई जांच कराने हेतु राज्य सरकार की अनुशंसा को केंद्र ने स्वीकार कर लिया है। इसके लिए केंद्र सरकार को ध न्यवाद! आशा है कि अब बेहतर जांच हो सकेगी और न्याय मिल सकेगा।' अभी कुछ दिनों पहले बीजेपी के कला और संस्कृति प्रकोष्ठ ने बिहार में सुशांत सिंह राजपूत के लिए 'ना भूले हैं! ना भूलने देंगे!!' के स्टिकर और पोस्टर छपवा कर बांटे।

सूडोकु नवताल-5479

मध्यम

6	9			7	4		8	
	8	5	6	2			4	9
7						6		3
	3	9	5				1	
1				8				5
	6				2	9	3	
4		7						2
8	2			5	9	1	7	
	1		2	3			5	8

Jagrutidaur.com, Bangalore

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
- पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु नवताल -5478 का हल

6	5	3	9	1	7	2	8	4
9	1	8	2	6	4	3	7	5
7	4	2	5	3	8	1	9	6
3	7	1	6	9	2	4	5	8
8	6	9	1	4	5	7	2	3
5	2	4	8	7	3	9	6	1
2	9	5	4	8	1	6	3	7
4	3	6	7	5	9	8	1	2
1	8	7	3	2	6	5	4	9

अपना ब्लॉग

प्रकरण को जीवित रखने से कितना फायदा

मोहन। 2013 में फिल्म जगत में उनके चर्चित होने से लेकर उनकी मृत्यु के दिन तक बिहार सरकार ने कभी सुशांत सिंह राजपूत की सुध नहीं ली। कभी कोई सम्मान या पुरस्कार नहीं दिया, न ही किसी विभाग का ऐम्बैसडर नियुक्त किया। अचानक मौत के बाद सभी को ख्याल आया कि वह बिहारी थे। अब बिहार चुनाव का परिणाम बताएगा कि बीजेपी या जेडीयू में किसे इस प्रकरण को जीवित रखने से कितना फायदा हुआ। मुझे याद है, पटना में हो रहे एक फिल्म फेस्टिवल के लिए स्वयं मैंने और फेस्टिवल के अधिकारी प्रशांत कश्यप ने सुशांत सिंह राजपूत को बुलाने की बार–बार कोशिश की। वह हर बार टालते रहे। उन्होंने मुझसे तो नहीं लेकिन प्रशांत कश्यप से आग्रह किया कि 'बिहारी पहचान के साथ पटना में ना बुलाएं। मैं किसी और इवेंट में आ जाऊंगा।' अभी कुछ महीने पहले फरवरी 2020 में बिहार के पूर्णिया जिले की 250वीं वर्षगांठ थी। पूर्णिया महोत्सव के आयोजक भी पूर्णिया के मलडिहा गांव के मूल निवासी और लोकप्रिय चेहरे सुशांत सिंह राजपूत को बुलाने की कोशिश में नाकाम रहे।